श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करों प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम।।
सर्व साधु वा सरस्वती, जिनमंदिर सुखकार।
अहिच्छत्र और पार्श्व को, मनमन्दिर में धार।।

पार्श्वनाथ जगत हितकारी, हो स्वामी तुम व्रत के धारी।
सुर नर असुर करें तुम सेवा, तुम हो प्रभु देवन के देवा।
तुम से कर्म शत्रु भी हारा, तुम कीना जग का निस्तारा।
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आखों के तारे।

काशी जी के भूप कहाये, सर्व प्रजा अति मोद मनाये।
इक दिन सब मित्रों को ले के, सैर करन को वन में पहुंचे।
हाथी पर कस कर अम्बारी, इक जंगल में गई सवारी।
एक तपस्वी देख वहाँ पर, उससे बोले वचन सुनाकर।

तपसी ! तू क्यों पाप कमाये, इस लक्कड़ में जीव जलाये।
प्रभु ने तभी कुदाल उठाया, उस लक्कड़ को चीर गिराया।
निकले नाग नागिनी कारे, मरने के थे निकट विचारे।
दया प्रभू के दिल में आई दिया मन्त्र नवकार सुनाया।

मरकर वो पाताल सिधारे, पद्मावती धरणेन्द्र कहाये।
तपसी मर कर देव कहाया, नाम कमठ ग्रंथों में गाया।
एक समय श्री पारसस्वामी, राज छोड़कर वन की ठानी।
तप करते थे ध्यान लगाये, इक दिन कमठ वहाँ पर आये।

तत्क्षणही प्रभु को पहिचाना, बदला लेने को दिल में ठाना।
बहुत अधिक बारिस बरसाई, बादल गरजे गाज गिराई।
बहुत अधिक पत्थर बरसाये, स्वामी तन को नहीं हिलाये।

पद्मावति धरणेन्दर भी आये, प्रभु की सेवा मे चित लाये।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर स्वामी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने फण फैलाया, प्रभु के सर पर छत्र बनाया।
यही जगह अहिच्छत्र कहाये, पात्र केशरी जहां पर आये।
थे पण्डित ब्राह्मण विद्वाना, जिनको जाने सकल जहाना।

शिष्य पाँचसौ संग में आये, सब कट्टर ब्राह्मण कहलाये।
पार्श्वनाथ का दर्शन पाया, सबने जैन धर्म अपनाया।
अहिच्छत्र थी सुन्दर नगरी, जहाँ सुखी थी परजा सगरी।
राजा श्री बसुपाल कहाये, वो इक जिन मन्दिर बनवाये।

प्रतिमा पर पालिश करवाया, फोरन एक मिस्त्री बुलवाया।
वह मिस्त्री था मांसाहारी, पालिश गिर जाती थी सारी।
मुनि ने उसे उपाय बताया, पारसदर्शन व्रत दिलवाया।
मिस्त्री ने व्रत पालन कीना, तत्क्षण ही रंग चढ़ा नवीना।

गदर सत्तावन का किस्सा हैं, इक माली को यो लिक्खा हैं।
माली इक प्रतिमा को लेकर झट छिप गया कुए के अन्दर।
उस पानी का अतिशय भारी दूर होय सारी बीमारी।
जो अहिच्छत्र हदय से ध्यावें, सो नर उत्तम पदवी पावे।

पुत्र सम्पदा की बढ़ती हो, पापों की इकदम घटती हो।
है तहसील आँवला भारी, स्टेशन पर मिले सवारी।
रामनगर इक ग्राम बराबर, जिसको जाते सब नर नारी।
चालीसे को 'चन्द्र' बनाये, हाथ जोड़कर शीश नवाये।

नित ही चालीस बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेवे धूप अपार, अहिच्छत्र में आय के।
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं संतान, नाम वंश जग मे चले।।

(इति श्री पार्श्वनाथ चालीसा)